डॉ० शैलेंद्र मोहन मिश्र
सहायक प्राचार्य
सी०एम०जे० कॉलेज
दोनवारी हाट, खुटौना

नेपालक मैथिली नाटकक वैशिष्ट्य

नेपालमे मैथिली नाटकक रचना मुख्य रूपसँ सत्रहम शताब्दी सँ लए अठारहम शताब्दीक आरम्भ मे भेल । एहि नाटकक प्रमुख विशेषता थिक मैथिली गद्यक प्रयोग । सम्भवतः एही कारणें एकरा मैथिली नाटकक कोटि मे मानल जाइत अछि ।

नाटकक आरम्भ नृत्य नाथ ओ नटेश्वरक मङ्गल गीत सँ कएल गेल अछि । यथा ' श्री नृत्य नाथाय नमः ' , 'ॐ नमः श्री नृत्य नाथाभ्याम ' , ' ॐ नमः श्री नटेश्वराय ' एहि रूपें आरम्भ कएल गेल अछि । नान्दी श्लोक द्वारा पार्वती महादेवक स्तुति कएल गेल अछि । नान्दी गीत मैथिली मे अछि ।

सूत्रधारक प्रवेश गीत अछि । प्रस्तावनाक विधान संस्कृत तथा प्राकृत मे अछि । रंगमंच पर सूत्रधार संस्कृत पुष्पांजलि श्लोक सँ रंग पूजा करैत अछि। सूत्रधारहिक द्वारा राजवर्णना कएल गेल अछि । नटी द्वारा गीतक माध्यमे देश वर्णन कएल गेल अछि । सूत्रधार ओ नटीक संबाद मे अभिनित नाटक ओ राजाक आदेशक कथन होइत अछि । सूत्रधार ओ नटीक निस्सार गीतक पश्चात मुख्य कथाक आरम्भ होइत अछि । प्रवेश करैत पात्र लोकनि अपन - अपन परिचय संस्कृत श्लोक मे दैत छथि । कथोपकथन मैथिली गीत तथा मैथिली गद्यमे अछि । रंगमंचक निर्देश संस्कृत , मैथिली तथा स्थानीय प्रभावें कतहुँ नेवारी भाषा मे देल गेल अछि । भरत वाक्य संस्कृत श्लोक मे अछि । राजाक शुभासंशा संस्कृत गद्यहु मे कएल गेल अछि । पुष्पिका वाक्य साधारणतः संस्कृत मे अछि ।

नाटक गीत प्रधान अछि । गीत सभ विभिन्न राग - रागिनी मे बान्हल अछि जाहि सँ ई प्रमाण भेटैत अछि जे ओ लोकनि संगीत शास्त्रक मर्मज्ञ छलाह । नृत्यक प्रधानता सभ नाटक मे अछि । अवसर विशेष पर अभिनय करबाक हेतु लिखल गेल ई नाटक सभ अभिनेय अछि आ दर्शक वृन्दकें मनोरंजन करबाक क्षमता रखैत अछि ।

एहि नाटक सभक कथावस्तु पौराणिक अछि । रामायण , महाभारत , पुराणादि सँ एकर कथावस्तु लेल जाइत छल । संस्कृत नाटकक लक्षण पद्धति पर रसादिक नियोजन कएल गेल । रंगमंच मे चित्रित पटक प्रचलन नहि छल आ ने कथाक प्रकरणक अनुसार दृश्य सजाओल जाइत छल । गीतक भाव बुझि दृश्यक अनुमान होइत छल । पात्रक संख्या सीमित नहि छल । उपवन मे आनन्दोत्सव तथा युद्धक प्रकरण मे अनेक पात्र नाटकमे भाग लैथि । ओहने वाद्य यंत्रक प्रयोजन पड़ैक जकर मौखिक गायनक संग बजेबाक परिपाटी छलैक । प्रकाशक व्यवस्था मे कठिनताक कारणें अभिनय दिन मे होइक , फैल स्थान मे निर्मित रंगमंच पर । नाटकक विभाजन अंकमे कएल गेल छैक । परन्तु अंकक आकार मे अभिनय करबाक समयक ध्यान राखल गेल छैक । नाटकक आकारमे एकरूपता नहि छैक । कोनो एको अंकक नाटक अछि कोनो तेतालिसो अंकक । तैं नाटकमे एकटा अंक ओतबय बुझल जाए जतबा अंशक एक दिनमे अभिनय भए सकए । अर्थात पैघ - पैघ नाटकक अभिनय कैक दिनमे सम्पन्न होइक।

नेपालक मैथिली नाटक सँ तत्कालीन नेपाली राजा लोकनिक ऐश्वर्य ओ साहित्य संगीत प्रियताक नीक जकाँ परिचय भेटैत अछि । मैथिलीक जाहि रूपक साहित्य एहि दरबार सभमे रचित भए विकसित भेल ताहि सँ

स्पष्ट सिद्ध होइत अछि जे मैथिली नेपाल मे उच्च रूपेँ समादृत छल । नाटकमे मैथिली गद्यक प्रयोग सिद्ध करैत अछि जे नेपालक मैथिली साहित्यकार प्रयोगशील प्रतिभाक लोक छलाह । संस्कृत केँ छोड़ि मैथिली गद्य - पद्यक प्रयोग करब हुनक लोकानुरंजनक प्रतीक थिक ।

निष्कर्षतः मध्ययुगीन नेपालक मल्लकालीन एहि उपर्युक्त विशाल मैथिली नाटकक विवरण देखला सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ई समस्त नाटक ने केवल कथावस्तु, रस आदिक निरूपण मे संस्कृत सँ प्रभावित अछि ताहि मे कोनो सन्देह नहि । एहि ठामक संस्कृत नाट्यकार पहिने कवि रहथि पश्चात नाट्यकार । नाटकक दुइ प्रधान तत्व कथावस्तु निर्माण आओर चरित्र चित्रण मे सँ ओ लोकनि चरित्र केँ प्रधानता देलनि आ कथावस्तु केँ गौण बना देल गेल । एहि दुनू तत्व केँ काव्यतत्वक समक्ष नगण्य बना देल गेल । नृत्य आओर गीतक बाहुल्यक फलस्वरूप जीवनक यथार्थताक चित्रण एहिमे नहि भेल अछि । काल्पनिकता केँ अधिक प्रश्रय देल गेल अछि ।एहि सभ नाटकमे मैथिली गीतक प्रचुरता ओ मैथिली भाषा मे कथोपकथनक कारणेँ ई मैथिलीक नाटक थिक ताहिमे कोनो संदेह नहि ।